वर्ष 10 अंक 11
नवम्बर 2018

वानिकी समाचार

भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्

अनुक्रमणिका

पृ.सं.
01 महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष
02 कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठकें
03 प्रशिक्षण कार्यक्रम
05 प्रकृति कार्यक्रम
06 गण्यमान्य व्यक्तियों का दौरा
06 महानिदेशक का दौरा
06 प्रदर्शनी/मेला
06 दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना
06 मानव संसाधन समाचार

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष :

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- ''जोधपुर जिले में जैविविधता का आकलन और विकास योजना हेतु लोगों की अवधारणा तथा विभिन्न समुदाय आरक्षित क्षेत्रों में जागरूकता सृजन''
  - औसत घनत्व तथा आवक्ष क्षेत्रफल वृक्षों हेतु 68.2 वृक्ष हे$^{-1}$ व 1.75मी.^{2} हे$^{-1}$ तथा शाकों हेतु 77.5 शाक हे$^{-1}$ व 0.27 मी.^{2} हे$^{-1}$ क्रमशः तक भिन्न था, जोकि निम्न वानस्पतिक आच्छादन को इंगित करता है। वृक्ष प्रजातियों हेतु प्रजाति बहुलता का मान, विविधता, प्रमुखता तथा एकरूपता 2.05–4.33, 0.45–1.21, 0.36–0.70 व 0.41–0.87 एवं शाकों हेतु 0.21–2.79, 0.13–1.05, 0.41–0.66 तथा 0.00–1.10 निम्न वानस्पतिक विविधता इंगित करता है, जो कि भू–प्रयोग विविधता के बजाय मुख्यतः जलवायुवीय तथा मृदीय कारकों से प्रभावित हैं, यह वार्षिक वर्षा तथा वृक्ष प्रजाति बहुलता, विविधता व एकरूपता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध से दर्शित किया गया।
  - क्षेत्र की स्थानीय जनता वन्यजीव तथा संबंधित प्राकृतिक संसाधनों का समुदाय आधारित संरक्षण एवं प्रबंधन की इच्छुक थी, लेकिन सकारात्मक नजरियों में सुधार हेतु संरक्षण जागरूकता तथा शिक्षा को और अधिक सुव्यवस्थित एवं परिष्कृत करने की आवश्यकता है। लोगों के नजरिये तथा अवधारणा के अनुसार, जोधपुर जिले में रक्षण, संरक्षण एवं वन्य जीव प्रबंधन में सहयोग लेने तथा लोगों की भागीदारी में लिए गए कुछ महत्वपूर्ण उपाय निम्नलिखित हैं :
    - भोजन तथा छाया हेतु चरागाहों/रेंजलैंड में चारा प्रजातियों का रोपण तथा घास के बीजों की बुवाई,
    - वास स्थलों की स्थिति में सुधार हेतु विकसित वास स्थलों के चारों ओर जल उपलब्धता में वृद्धि तथा चाहरदीवारी/घेराबंदी का निर्माण,
    - शिकारी तथा जंगली कुत्तों से वन्यजीव रक्षा,
    - वन्यजीव अस्पताल एवं बचाव केन्द्रों की स्थापना, तथा
    - ग्राम स्तर पर देखभाल के लिए स्थानीय युवकों को प्राथमिक–पशुचिकित्सा प्रशिक्षण प्रदान करना।

वन अनुसंधान संस्थान देहरादून

- उत्तराखंड के विभिन्न वन प्रकारों में मृदा पोषक तत्वों के पूल अध्ययन के प्राथमिक परिणाम हिमालयी उप–उष्णकटिबंधीय पाईन वनों में अपर्याप्त मृदा में उपलब्ध N,P तथा K की मात्रा का संकेत देते हैं। जबकि, उत्तरखंड के देहरादून वनों के उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती साल वन एवं उष्णकटिबंधीय जल दलदली वनों में, उपलब्ध N,P तथा K सामान्य थे।
- पर्ण समूह तथा बीजों पर नाशी कीटों का प्रयोगशाला में पालन किया गया। चकराता तथा सरहन (हि.प्र.) से एकत्रित बीजों को 100% कैल्सिड वेधकों द्वारा संक्रमित पाया गया। चकराता से एकत्रित घास की पांच प्रजातियों को, एलफिड्स की पीढ़ी के पालन हेतु अनुरक्षित किया गया। इसी प्रकार गेहूँ, जई और जौ भी एलफिड्स के शीत पीढ़ी के पालन पर प्रयोग संचालित करने हेतु गमलों में रोपित किए गए। कार्य परियोजना ''स्व–स्थाने पर्ण अर्बुद उत्पादन की सम्भाव्यता अन्वेषण हेतु *पिस्तासिया इंटीग्रेरिमा* का पिटिका विज्ञान एवं पौधशाला अध्ययन (डाबर इंडिया लि.)'' के अंतर्गत किया गया।
- एकत्रित नमूनों से, 20 एपेनटेलस प्ररूपों को पृथक किया गया। व.अ.सं., देहरादून से *पोन्गैमिया पिन्नाटा* तथा *पोपलस* प्रजा. सहित वानिकी वृक्षों से *एपेनटेलस* प्रजा. के उद्गम हेतु 5 कीटडिंभ नमूने एकत्रित किए गए। परियोजना ''उत्तराखंड तथा हरियाण से कीटडिंभ परजीव्याभ, *एपेनटेलस* प्रजा. (हाइमेनोप्टेरा : ब्रैकोनिडी) की वर्गिकी तथा

मेजबान रेंज पर अध्ययन'' के अंतर्गत *एपेनटेलस* प्रजा. का स्लाइड निर्माण तथा प्रजाति चिन्हीकरण प्रगति में है।

- अंड परजीव्याभों (ट्राइकोग्रामैटिडी, स्किलिओनिडि, इनसायरिटिडी तथा मायमेरिडि) के लगभग 70 प्रतिरूप एकत्रित नमूनों से प्राप्त किए गए। 20 स्लाइड निर्मित किए गए तथा प्रजाति स्तर *(एफिलिनोडिआ* प्रजा., *कीटोस्ट्राइका* प्रजा. *ओलिगोसिटा गिलवस, ओलिगोसिटा मीरूटेनसिस, ओलिगोसिटा सैनगविना, ओलिगोसिटा नोविसैनग्विना, स्यूडोलिगोसिटा नेफोटेट्टीकम, लेथ्रोमेरोडिआ सिल्वारम)* तक चिन्हित किए गए। अंड परजीव्याभों का स्लाइड निर्माण तथा छायाचित्रण जारी है। कार्य परियोजना ''उत्तरी भारत (हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड) से हाइमेनोप्ट्रेन अंड परजीव्याभों की विविधता तथा मेजबान रेंज पर अध्ययन'' के अंतर्गत किया गया।
- परियोजना *''क्लोरोफोरस एनयुलेरिस* फैब. (कोलिओप्टेरा : सिरामबाइसिडी) – कटे व सूखे बांस का मुख्य वेधक, का महामारी विज्ञान एवं प्रबंधन के अंतर्गत संक्रमित सूखी बांस प्रजातियां एकत्रित की गई, परीक्षित की गई तथा नियंत्रण उपायों पर प्रयोगों के अवलोकन हेतु व.अ.सं., देहरादून की कीटशाला में पिंजरों में रखी गई।
- नवम्बर के दौरान मसूरी (बेनोग वन्य जीव अभ्यारण्य तथा कोटि किमोई), टिहरी गढ़वाल (धनोल्टी – डंडा– की–बेली), कालसी (तिमली) तथा हरिद्वार (झिलमिल झील) वन प्रभाग में एक सर्वेक्षण किया गया। 12/सी 1ए बन ओक वनों के 3 ट्रांजेक्टों तथा 5 बी/सी 2 उत्तरी शुष्क मिश्रित पर्णपाती वनों के 3 ट्रांजेक्टों में तितलियों के नमूने लिए गए तथा अब तक नमूना ली गई 181 प्रजातियों की सूची में नमूना ली गई 61 प्रजातियों से 2 नवीन प्रजातियों को संकलित किया गया। विभिन्न वन प्रकारों के अंतर्गत तितलियों की प्रजातियों के आंकड़ा–भंडार में खाद्य पादपों को जोड़ कर अद्यतन किया गया। सर्वेक्षण के दौरान पकड़ी गई तितलियों के नवीन प्रतिरूपों को स्ट्रेचड, परिरक्षित तथा अभिज्ञात किया गया। हरिद्वार जिले के झिलमिल झील संरक्षण रिजर्व के लिए वन प्रकारों को भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित मानचित्र सृजित किया गया।
- मसूरी वन प्रभाग में बेनोग वन्यजीव अभयारण्य तथा वुडस्टॉक स्कूल – कोटी–किमोई वन तथा धनोल्टी, टिहरी गढ़वाल के बन ओक वनों में एक सर्वेक्षण किया गया। मसूरी में बन ओक वृक्ष–वनों में चपटे सिर वाले वेधक (बुप्रेसिटिडि) की व्यापकता पर आंकड़े दर्ज किए गए। सर्वेक्षण के दौरान बन ओक वृक्षों से लेपीडोप्टेरा की 11 प्रजातियों के कीटडिंभ नमूने भी एकत्रित किए गए, जिन्हें जीवन इतिहास अध्ययनों हेतु पाला गया, जिसमें से 2 प्रजातियों के शलभ का उद्गम हुआ जबकि अन्य प्यूपल तथा कीटडिंभ चरणों में हैं।
- कोदापुर (प्रयागराज) में *जी. अर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* के प्राथमिक वृद्धि आंकड़े संकलित किए गए तथा कोदापुर (प्रयागराज) स्थल में प्राथमिक प्रयोग चरण की मृदा जांच प्रगति में है। परियोजना ''उत्तराखंड तथा उत्तर प्रदेश में निम्नीकृत भूमियों में *मेलिना आर्बोरिया* तथा *ऐम्बलिका ऑफिसिनेलिस* आधारित कृषि वानिकी मॉडलों का विकास''के अंतर्गत स्थलों फतेहपुर (पेलियो), धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार) तथा कोदापुर (प्रयागराज) में *जी. अर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* के रोपणों का अनुरक्षण एवं अनुश्रवण जारी है।
- अरूणाचल प्रदेश से एकत्रित पेरिस पॉलीफैल्ला के 8 अनुक्रमों को उनके प्रकंदों में कुल सेपीनिन मात्रा हेतु लक्षण–वर्णित किया गया।
- चौरंगीखाल तथा रेडीटॉप, उत्तरकाशी के वनों में उगने वाली *क्वार्कस सेमीकार्पिफोलिया* की 2 वृक्ष आबादियों को उनके पर्णों में कुल फिनोलिक मात्रा हेतु पहली बार लक्षण–वर्णित किया गया।

कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठकें :

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	कृषि वानिकी : अवसर एवं चुनौतियां	16 नवंबर 2018	व.अ.सं. के प्रभागाध्यक्ष, अधिकारी, वैज्ञानिक तथा कृषक, गैर सरकारी संगठन, एवं देहरादून के अन्य संस्थानों सहित 50 प्रतिभागी

कृषिवानिकी : अवसर एवं चुनौतियों पर संगोष्ठी

	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर		
2.	कृषि वानिकी अनुसंधान एवं विकास–एक पुनरावृति तथा भविष्य हेतु रोडमैप	28 नवंबर 2018	विभिन्न अनुसंधान संगठनों जैसे टी.एन.ए.यू., के.ए.यू., के.एफ.आर.आई. से हितधारक, भा.कृ.अ.प. संस्थान, राज्य वन विभाग से कार्मिक, एग्रोफॉरेस्टर, काष्ठ आधारित उद्योग तथा गैर सरकारी संगठन
3.	अनुसंधान अध्येताओं की मासिक संगोष्ठी	12 नवंबर 2018	व.आ.वृ.प्र.सं. के अनुसंधान अध्येता

कृषिवानिकी अनुसंधान एवं विकास–एक पुनरावृति तथा भविष्य हेतु रोडमैप पर संगोष्ठी

अनुसंधान अध्येताओं की मासिक संगोष्ठी

	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला		
4.	जीविका समर्थन तथा आर्थिक वृद्धि के लिए वन एवं वन उत्पादों का प्रबंधन	30 नवंबर 2018	वैज्ञानिक, अधिकारी अनुसंधान एवं तकनीकी सहायता कार्मिक

प्रशिक्षण कार्यक्रम :

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	अकाष्ठ वन उत्पादों (पादप मूल) का मूल्य वर्धन एवं विपणन : बाँस हस्तकौशल	13 नवंबर 2018–18 जनवरी 2019	–
2.	बाँस प्रवर्धन एवं पौधशाला प्रबंधन	13–15 नवंबर 2018	ईको टास्क फोर्स
3.	वन संवर्धन एवं वानिकी	26–30 नवंबर 2018	ईको–टास्क फॉर्स के 35 कार्मिक
	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर		
4.	वन से बाहर वृक्षों को लोकप्रिय बनाना	14–16 नवंबर 2018	समस्त तमिलनाडु के के.वी.के. वैज्ञानिक

5.	वन आनुवंशिकी संस्थान प्रबंधन	26–30 नवंबर 2018	विभिन्न राज्यों से भा.व.से. अधिकारी

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरू

6.	चंदन काष्ठ रोपणियों का एकीकृत कीट एवं व्याधि प्रबंधन	20 नवंबर 2018	रोपणी स्वामी तथा आर.एफ.ओ.
7.	महत्वपूर्ण प्रकाष्ठों का क्षेत्र चिन्हीकरण	12–16 नवंबर 2018	नौसेना गोदीवाड़ा, मुंबई तथा विशाखापट्नम; केरल वन विभाग तथा कर्नाटक वन विभाग
8.	बाँस प्रवर्धन एवं प्रबंधन	24 सितम्बर–9 नवंबर 2018	बेरोजगार युवक, छात्र तथा गैर सरकारी संगठन

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

9.	बाँस हस्तशिल्प, मूल्य वर्धन तथा बाँस परिरक्षण तकनीकियां	25 अक्टूबर–7 नवंबर 2018	असम के जोरहाट तथा शिवसागर जिलों से उद्यमी
10.	समुदायों के जीविका प्रसंगों के समाधान हेतु बाँस संसाधन विकास	12–16 नंवबर 2018	भारत के 17 राज्यों से भा.व.से. अधिकारी
11.	समुदाय उद्यम के प्रसार हेतु बांस हस्तशिल्पों पर कौशल विकास	12–16 नवंबर 2018	–

व.अ.के.–आ.वि. में "समुदाय उद्यम के प्रचार हेतु बाँस हस्तशिल्पों पर कौशल विकास" पर प्रशिक्षण

12.	बाँस गृह तथा संबंधित अनुप्रयोगों के निर्माण हेतु प्रसंस्करण, परिरक्षण तथा शिल्पकार कार्य	16,17 तथा 19 नवंबर 2018	–

13.	रेड्ड + पथप्रदर्शी परियोजना के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि वानिकी, सौर–ऊर्जा तथा उन्नत चूल्हा	30 नवंबर 2018	–
14.	उत्तर पूर्व राज्यों के आजीविका मुद्दों के समाधान में वानिकी	28 से 30 नवंबर 2018	मेघालय से सकारी विभाग के प्रशिक्षु, जे.एफ.एम.सी.सदस्य, शैक्षिक संस्थानों के छात्र, पंचायत सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता, शैक्षणिक समुदाय तथा मीडिया कार्मिक

हिमलायन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

15.	महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पादपों की कृषि : ग्रामीण आय के विविधीकरण एवं संवर्धन हेतु विकल्प	19 से 21 नवंबर 2018	वार्ड सदस्य, महिला मण्डल, ईको टास्क फोर्स, भा.ति.सी.पु. से माली, शिक्षक, गैर–सरकारी संगठन, मीडिया कर्मी, पंचायत सचिव तथा खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय से कार्मिक

महत्वपूर्ण समशीतोषण औषधीय पादपों की कृषि : ग्रामीण आय के विविधीकरण एवं संवर्धन हेतु विकल्प पर प्रशिक्षण

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

16.	अश्वगंधा *(विथेनिआ सोमनिफेरा)* के विशेष संदर्भ के साथ औषधीय पादपों की वाणिज्यिक कृषि	16 नवंबर 2018	दार्जिलिंग तथा निकटवर्ती ग्रामों के 28 कृषकों ने भाग लिया

प्रकृति कार्यक्रम :

- भा.वा.अ.शि.प. तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं भा.वा.अ.शि.प. तथा नवोदय विद्यालय समिति के मध्य समझौता ज्ञापन के अनुसार, हि.व.अ.सं., शिमला ने "प्रकृति" कार्यक्रम के अंतर्गत, वनों एवं पर्यावरण के बारे में जागरूकता प्रसार के उद्देश्यों से; केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों में एक संतुलित पर्यावरण एवं समाज के प्रेरित करने तथा वन, पर्यावरण एवं समाज के रक्षण की ओर कौशल अर्जित करने जोकि देख–रेख को प्रतिबिंबित करते हैं, के लिए 20 नवंबर 2018 को केन्द्रीय विद्यालय, जाखो हिल, शिमला में "वन पारिस्थितिकी तंत्र में कवक का महत्व पर एक व्याख्यान आयोजित किया।

गण्यमान्य का दौरा :

- श्री सिद्धांत दास, महानिदेशक वन एवं विशेष सचिव, प.व.ज.प.मं., नई दिल्ली ने 20 नवंबर 2018 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री बिपलब कुमार देब ने 15 नवंबर 2018 को व.अ.के.–आ.वि., अगरतला पर दौरा किया।
- श्री उमामहेशवरणन, वैज्ञानिक सचिव, इसरो ने 16 नवंबर 2018 को वन अनुसंधान संस्थान का दौरा किया।

श्री सिद्धांत दास, महानिदेशक वन एवं विशेष सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

महानिदेशक का दौरा :

- डॉ. सुरेश गैरोला, भा.व.से., महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प. ने 22 नवंबर 2018 को व.अ.के.–आ.वि., अगरतला का दौरा किया।

डॉ. सुरेश गैरोला, भा.व.से., महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प. ने व.अ.के.–आ.वि. का दौरा किया।

प्रदर्शनी / मेला :

संस्थान	प्रतिभाग / आयोजन	समयावधि	स्थान
उ.व.अ.सं., जबलपुर	प्रदर्शनी	21–23 नवंबर 2018	खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
	10वां एग्रो विजन मेला	23–26 नवंबर 2018	नागपुर

दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना

कार्यक्रम	चैनल	दिनांक
वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
बाँस की खेती	डी.डी. किसान	28 नवंबर 2018
इस मौसम में बांस की खेती से संबंधित तैयारियां	डी.डी. किसान	29 नवंबर 2018

मानव संसाधन समाचार

स्थानांतरण

से	को
हि.व.अ.सं., शिमला	भा.वा.अ.शि.प., मुख्यालय

डॉ. रंजीत सिंह, वैज्ञानिक – 'जी'

सेवानिवृत्ति

अधिकारी का नाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
डॉ. प्रमोद कु. पाण्डेय, वैज्ञानिक – 'एफ', व.अ.सं., देहरादून	30 नवंबर 2018

संरक्षक:
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक
संपादक मंडल:
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), मानद सम्पादक
श्री रमाकांत मिश्र, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग),सदस्य

प्रत्याख्यान
- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- यहां प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।